

 **Caritas**
INDIA
The Joy of Service...



कारितास इंडिया

नई दिल्ली

द्वारा संचालित

सामाजिक क्षेत्र का
पर्यावरण अध्ययन केंद्र

पारिवारिक रखेती



जनहित में प्रकाशित

कारितास इंडिया, सेंटर फॉर इन्वर्हामेंटल स्टडीज् इन सोशल सेक्टर - CESSS

ग्राम मलकापूर, पोस्ट गौलखेडा बाजार, ता.चिखलदरा, जि.अमरावती.

संपर्क क्रमांक : ०९४२१८२८९९३

संयुक्त राष्ट्र के ६६ वे जनरल एसम्ब्ली में कौटुंबिक खेती के महत्व को समझकर सन २०१४ को पारिवारिक खेती का आंतरराष्ट्रीय वर्ष घोषित किया गया था। इस का महत्व यह है कि पारिवारिक खेती को कृषि, पर्यावरण एवं सामाजिक नीतियों को राष्ट्रीय विकास की धारा से जोड़कर एक स्थायी विकास की ओर ले जाना है, जिससे कि यह खेती करने वाले परिवारों को खाद्य सुरक्षा, पारंपारिक खाद्य पदार्थों का संरक्षण, परिवार में पौष्टिक भोजन की उपलब्धता जिससे कि हमारे प्राकृतिक संसाधनों को हानी न पहुँचे एवं पारिवारिक खेती यह स्थानिक अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देकर विशेष नीतियों के द्वारा सामाजिक सुरक्षा और समुदाय कल्याण का ध्येय रखता है।

पारिवारिक खेती क्या है ?

एक परिवार द्वारा कृषि, पशुपालन, मत्स्यपालन, वनीकरण इत्यादि साधनों के द्वारा किसी मजदूरी के बीना महिला और पुरुष दोनों सहित अपने परिवार की खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करने को पारिवारिक खेती कहते हैं। हमारे देश में हर वर्ष खेती के प्रति किसानों की रुची कम होती जा रही है, जिस के कारण है, खेती में प्रयोग होने वाले खर्च में बढ़ोतरी होती जा रही है और खेती से कोई लाभ नहीं हो रहा है। जहाँ तक खेती के तकनीकों में बहुत विशाल विकास हुये है। जैसे की बड़े बड़े खेतों में आधुनिकीकरण हुये है लेकिन तब भी छोटे एवं मध्यम वर्गीय किसान जो भी अपने खेतों में उगाते है उनको खरीदने के लिए जागरुक ग्राहकों से बाजार भरे हुये है जो कि ताजा, प्राकृतिक, कीटनाशको और रसायन मुक्त धान्य, सब्जी और फल खाना पसंद करते है।

पारिवारिक खेती यह जीवन जीने के का मार्ग है, जिसमें कि संसाधनों के उपयोग से लाभ पाने के लिये नही बल्की जीवन बनाने के लिए होता है।

बिना आयात करे स्वयं फसल उगाए और खाये :

एक परिवार के भोजन के लिए आवश्यक सामग्री को स्वयं से उगाना और छोटे बाजारों में बेचने से स्वास्थ्य और पर्यावरण को संरक्षित रखने में योगदान मिलता है। बहुत दूर से लाये गए सब्जी और फल स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होता है जिसमें की उन खाद्य पदार्थों के पौष्टिक गुण खत्म हो जाते है, और पारिवारिक खेती से सुनिश्चित करती है की छोटे किसानो के उत्पाद से उनको लाभ मिले और उनके परिवार को ताजा, पौष्टिक आहार मिले। इससे मिलने वाली आय स्थानिय बाजार में रहने से परिवार के सदस्य और समुदाय में भी खुशियाँ आती है।

एकीकृत जैविक खेती प्रणाली :

एकीकृत खेती उसको कहते है जहाँ पर विभिन्न प्रकारों के खेती योग्य कामों को एक साथ अपने खेतों में कि जाती है । जैसे - जैविक खेती को पशुपालन के साथ में करनी चाहीये। एकीकृत खेती के पारंपारिक तरीके है जिसमें कृषि, पशुपालन, मत्स्यपालन एवं अन्य कृषि आधारित उपजीविकाओं को एक साथ मिलाकर करते है । इसलिए एकीकृत जैविक खेती प्रणाली एक संपूर्ण खेती के विविध विधियों का मिश्रण है जो कि खेती की उत्पादकता

को बढ़ाता है जिससे विविधता, संसाधनों को सदुपयोग एवं बाजार सुविधायों को सुनिश्चित करती है।

यह व्यवस्था प्रकृति के सिद्धांतों के अनुकूल विभिन्न प्रकारके फसल, पशु, पक्षी, मछली एवं जल से संबन्धित वनस्पती और पशु सभी को एक साथ मिलाकर रहने के प्रबंध को कहते हैं। इसलिए कौटुंबिक खेती के द्वारा पूरा परिवार इसमें सहयोग करता है, जो कि हमारे प्राकृतिक पर्यावरण को मिश्रीत खेती, फसल चक्र, स्ट्रीप खेती, अंतर फसल, सहकार एवं पशुपालन द्वारा बरकरार रखते हैं। जैसा कि हम जानते हैं कि प्रकृति में मनुष्य, पशु, पक्षी एवं पौधे एक दुसरे से जुड़े हैं जिसको हम निर्भरता भी बोलते हैं, और अध्ययन से यह बात पता चलती है कि अगर हम सभी घटकों को एक साथ अपनाए तो यह हमारे खेती में सहयोग करेंगी। यह बात हम अच्छी तरह से ज्ञान होनी चाहिये कि स्थानिय एवं पारंपारिक बीज जो कि स्थानिय वातावरण और जलवायु में अच्छी पैदावार देते हैं वही हमारे परिवार का असली धन है।

एकीकृत जैविक खेती व्यवस्था के लाभ :

एकीकृत खेती में कृषि संबंधी सभी व्यवस्थाओं का एक साथ लाने की बात है, जैसे फसल उगाना, दुग्ध उत्पादन, मुर्गीपालन, खरगोशपालन, बकरीपालन, सुवरपालन, मछलीपालन, मधुमखीपालन, मशरूम उत्पादन, वनीकरण इत्यादि जिससे कि स्थानीय स्तर के कृषि अर्थव्यवस्था को बढ़ोतरी मिलती है। और इन सभी कार्यों को करने में परिवार के सदस्यों की सहभागीता अत्यंत आवश्यक है जिससे की हम मजदूरी को बचाकर परिवार के आमदनी में बढ़ोतरी कर सकते हैं। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि विविध प्रकारके खाद्य सामग्रियों के उत्पादन से परिवार को खाद्य सुरक्षा, पौष्टिक भोजन एवं रसायन मुक्त भोजन मिलता है। हमारे पास उपलब्ध भूमि को नियोजन के साथ उगाना और मिट्टी के कटाव को रोकने के लिए आच्छादन करना चाहिए। एकीकृत जैविक खेती विभिन्न विविधों को अपनाकर कि जाती है जैसा कि नीचे दी गयी है।

परिवार के पास जमीन कम है यह जादा महत्वपूर्ण नहीं है, परंतु वह जमीन का प्रभावी उपयोग करना सबसे महत्वपूर्ण है। यह पारिवारिक खेती के संकल्पना में परिवार के सदस्य के सक्रिय भागीदारी से इसे पुरा किया जा सकता है जैसे की बुआई, सिंचाई, निंदाई, खाद बनाना और उसे फसल को देना और समय पे फसल पे आनेवाली बिमारी और किट प्रतिबंध करने में सहायता करना सबसे महत्वपूर्ण है। एक दिन के कुछ पल पारिवारिक खेती में देने से व्यावसायिक चिकित्सा, खुद का अन्न खुद तयार करके खुद के और परिवार के जीवन के लिये सुरक्षित एवं स्वस्थ अन्न उगाकर खुशी की संस्कृति लाने की आदत जैसी बनती है।

निम्नलिखित घटक आप घर में कर सकते हैं।

- फसल, पशुपालन एवं पेड
- विभिन्न फसल पध्दतीयाँ जैसे एकल, मिश्रीत और बहुस्तरीय फसल, दाल, तिलहन, मशरूम इ.
- पशुधन घटक में दुधारु गाय, भेड, बकरी, मुर्गी, मधुमखी हो सकता है।
- पेड के घटक में इंधन, चारा और फलों के पेड हो सकते हैं।

अंतर फसल या मिश्रीत खेती के द्वारा :

खेती मे दो या दो से अधिक फसलों को साथ में उगाने की विधी को मिश्रीत खेती कहते है। अगर फसलों को कतार में बुआई की जाय तो इस विधि को अंतर फसल विधि कहते है । इन विधीयों में सबसे अधिक लाभ किट नियंत्रण में होता है जिससे की पैदावर में अधिक लाभ होता है । अलग अलग फसलों के आनुवांशिक गुण में विभिन्नता होने के कारण फसल मे होने वाली बिमारियाँ और किट प्रकोप भी अलग होते है। और पौधशास्त्र कहताहै की सभी फसल अलग अलग परिवार के होते है।

मुंगा एवं पपीते को फसल के साथ उगाना:

मुंगा के पेड हमारे बीच में एक आम पायी जाने वाली पेड है और इनको जब हम खेत के मेंड़ पर लगाते है तो हमें पौष्टिक सब्जी भी मिलती है और मिट्टी को उपजाऊ बनाए रखती है। उसी तरह से पपीते को भी किनारे लगाने से पौष्टिक फल और बाजार में बेच भी सकते है।

मछली टॉनिक फसल वृद्धिवर्धक के रूप में:

यह घोल एक फसल वृद्धिवर्धक के रूप में काम करता है इसको तयार करने के लिए १ किलो मछली के अवशेष, १ किलो गुड़, और १० लिटर पानी में मिलाकर अच्छे से एक प्लास्टिक बर्तन में ४ से ५ दिन तक रख दे, तैयार घोल को छानकर आधा लिटर घोल को १५ लिटी पानी में मिलाकर फसलों और सब्जीयों पर छिड़काव करे। इसमें अमीनो एसिड होने के कारण यह फसलों के नाईट्रोजन की जरूरत को पुरा करता है।

